



# JANMASHTAMI 2024 || जन्माष्टमी पर्व: कृष्ण जन्मोत्सव का पूरा मार्गदर्शन

## Janmashtami 2024

**जन्माष्टमी** (जिसे **कृष्ण जन्माष्टमी** या **गोकुलाष्टमी** भी कहा जाता है) हिंदू धर्म का एक प्रमुख त्योहार है, जो भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। यहां जन्माष्टमी के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है कि यह कब, कैसे और क्यों मनाई जाती है:

### 1. जन्माष्टमी कब मनाई जाती है?

- **तारीख:** जन्माष्टमी का पर्व भाद्रपद महीने के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाया जाता है। यह तिथि आमतौर पर अगस्त या सितंबर के महीने में आती है। यह दिन भगवान श्रीकृष्ण के जन्म का प्रतीक है, जो रात के समय हुआ था।
- **समय:** इस दिन का मुख्य पूजा और उत्सव आधी रात को मनाया जाता है क्योंकि मान्यता है कि भगवान श्रीकृष्ण का जन्म रात के 12 बजे हुआ था।
- **कृष्ण जन्माष्टमी 2024 कब है?**  
कृष्ण जन्माष्टमी 26 अगस्त 2024 को मनाई जाएगी।

### 2. जन्माष्टमी क्यों मनाई जाती है?

- **भगवान श्रीकृष्ण का जन्म:** जन्माष्टमी का पर्व भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। हिंदू धर्म में भगवान श्रीकृष्ण को विष्णु के आठवें अवतार के रूप में पूजा जाता है। उनका जन्म मथुरा में कंस के कारावास में देवकी और वसुदेव के घर हुआ था। श्रीकृष्ण ने धरती पर अधर्म और अत्याचार को समाप्त करने के लिए जन्म लिया था।
- **धर्म की स्थापना:** भगवान श्रीकृष्ण का जन्म अधर्म पर धर्म की विजय और अन्याय पर न्याय की स्थापना के लिए हुआ माना जाता है। उन्होंने महाभारत के युद्ध में पांडवों का मार्गदर्शन किया और गीता के माध्यम से कर्म, भक्ति, और ज्ञान का उपदेश दिया।

- **प्रेम और भक्ति का प्रतीक:** भगवान श्रीकृष्ण को प्रेम, भक्ति, और करुणा का प्रतीक माना जाता है। उनका जीवन और लीलाएं, जैसे राधा के साथ रासलीला, गोपियों के साथ प्रेम, और गोकुलवासियों के प्रति उनकी करुणा, सभी भक्तों के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं।
- **आध्यात्मिक संदेश:** श्रीकृष्ण ने भगवद गीता में जो उपदेश दिए, वे जीवन के विभिन्न पहलुओं पर आधारित हैं और आज भी धर्म, जीवन जीने की कला, और आध्यात्मिकता के मार्गदर्शक हैं। जन्माष्टमी का उत्सव इन उपदेशों और श्रीकृष्ण की शिक्षाओं की याद दिलाता है।

### 3. जन्माष्टमी के दिन श्री कृष्ण जी की पूजा और व्रत कैसे करें ?

- **व्रत (उपवास):** जन्माष्टमी के दिन भक्त उपवास रखते हैं। कुछ लोग पूरे दिन निर्जला व्रत रखते हैं, जबकि अन्य लोग फलाहार (फल, दूध, और अन्य सात्विक आहार) करते हैं। व्रत रखने का उद्देश्य मन और शरीर को शुद्ध रखना होता है।
- **मध्याह्निकी की पूजा:** जब आधी रात को भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ माना जाता है, तब भक्त मंदिरों में इकट्ठा होते हैं या घर पर पूजा करते हैं। इस समय विशेष आरती और भजन गाए जाते हैं। भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति या बाल स्वरूप को झूला झुलाया जाता है।
- **झांकी और साज-सजा:** इस दिन मंदिरों और घरों में भगवान श्रीकृष्ण के जीवन से संबंधित झांकी सजाई जाती है। बालकृष्ण की झांकियों के माध्यम से उनके बचपन की लीलाओं को प्रदर्शित किया जाता है। भक्तगण घरों और मंदिरों को फूलों, रंगोली, और दीपों से सजाते हैं।
- **दही हांडी:** महाराष्ट्र और कई अन्य क्षेत्रों में दही हांडी की प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। इसमें युवाओं की टोली मानव पिरामिड बनाकर मटकी को फोड़ने का प्रयास करती है। यह कृष्ण की बाललीला का प्रतीक है, जब वे मक्खन चुराते थे।
- **रासलीला और नाटक:** उत्तर प्रदेश, विशेषकर मथुरा और वृंदावन में, भगवान कृष्ण की रासलीला का मंचन किया जाता है। रासलीला में भगवान कृष्ण के जीवन की कहानियों का नाटकीय रूपांतर प्रस्तुत किया जाता है।
- **प्रसाद:** पूजा के बाद भगवान श्रीकृष्ण को विभिन्न प्रकार के मिठाई, फल, और विशेष रूप से मक्खन का भोग लगाया जाता है। भोग को बाद में प्रसाद के रूप में भक्तों में बांटा जाता है।

जन्माष्टमी का पर्व भगवान श्रीकृष्ण के दिव्य प्रेम, भक्ति, और उनकी लीलाओं का स्मरण कर मनाया जाता है। यह दिन भक्तों के लिए आध्यात्मिकता में लीन होने, धर्म का पालन करने, और श्रीकृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेने का महत्वपूर्ण अवसर है।

**Read More religious content on**

[vedicprayers.com](http://vedicprayers.com)